The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत–पाकिस्तान संबंधों में कष्मीर समस्या का विस्तृत अध्ययन

डॉ0 (श्रीमती) प्रीति पाण्डेय

प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान, शासकीय ठाकुर रणमत सिह, महाविद्यालय, रीवा (म0प्र0)

अविनाश कुमार प्रजापति

शोधार्थी (राजनीति विज्ञान), शासकीय ठाकुर रणमत सिह, महाविद्यालय, रीवा (म0प्र0)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15853758

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

जातिगत एवं धार्मिक दंगे, कश्मीर समस्या, सैनिक युद्ध

ABSTRACT

भारत और पाकिस्तान के मध्य अब तक सन् 1947, 1965, 1971 तथा 1999 में कुल चार बार सैनिक युद्ध हो चुके हैं, लेकिन पाकिस्तान को कभी भी युद्ध में सफलता नहीं मिली। 78 वर्षों में पाकिस्तान की भूमि से संचालित तथा पाकिस्तानी तत्वों से समर्थित आतंकवाद दोनों देशों के बीच एक प्रमुख समस्या बना हुआ है। भारत और पाकिस्तान के संबंध 21वीं सदी में भी काफी जटिल परिस्थितियों से जूझ रहे हैं। भारत व पाकिस्तान के संबंध में स्वतंत्रता के बाद से बहुत ज्यादा उतार–चढ़ाव आए, लेकिन आज भी भारत–पाकिस्तान के मध्य संबंधों में सुधार नहीं आए। विकास की गति जाति, समुदाय के टकराव के कारण अपना सम्पूर्ण विकास नहीं कर पा रहा है, क्योंकि जातिगत एवं धार्मिक दंगों से कश्मीर में अमन–चैन छीन लिया गया है, जो कि दोनों देशों के विकास में एक जटिल समस्या बना हुआ है तथा भारत और पाकिस्तान के बीच में बाधक एवं तनाव का प्रमुख कारण जम्मू–कश्मीर की समस्या है, जो दोनों देशों के मध्य एक सीमा का निर्धारण करती है। कश्मीर की समस्या दोनों देशों के बीच एक ऐसी ज्वालामुखी की तरह है, जो समय–समय पर लावा उगलती रहती है। अलाप माइकल के शब्दों में ''कश्मीर समस्या अनिवार्यता भूमि या पानी की समस्या नहीं, यह लोगों और देश की प्रतिष्ठा की समस्या है।

प्रस्तावना :–

भारत–पाकिस्तान संबंध वर्तमान समय में काफी जटिल परिस्थितियों से जूझ रहा है। भारत–पाकिस्तान के संबंध स्वतंत्रता के बाद से बहुत अधिक उतार–चढ़ाव आए, लेकिन आज भी भारत–पाकिस्तान के मध्य संबंधों में सुधार नहीं आया। स्वतंत्रता के शुरुआती वर्षों में भारत–पाकिस्तान के संबंध प्रभावित करते हुए भारत की विदेश नीति का एक सबसे अधिक कठिन भाग पाकिस्तान के साथ संबंधों का संचलन करना रहा है। भारत–पाकिस्तान के बीच संबंधों ने भारत के समस्त विदेश नीति के सभी पक्षों तथा इसके सारे अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों को प्रभावित कर रखा है। 1947 ई. में भारत के विभाजन द्वारा पाकिस्तान के मध्य दुर्भावना पैदा हो गई। यह विभाजन साम्प्रदायिकता तथा मुस्लिम लीग के दो राष्ट्रीय सिद्धान्त का परिणाम था, जिसमें वे दोनों राष्ट्रों के मध्य बहुत टकराव व कटुता आई थी, पहले तो भारत की विचारधारा पाकिस्तान के खो जाने की हानि के बारे में थी तथा पाकिस्तान की विचारधारा की ओर से खतरे तथा धमकी द्वारा निर्देश तथा कश्मीर की समस्या और पाकिस्तान के बीच सबसे उलझी हुई समस्या है। स्वतंत्रता के बाद जहां भारत और पाकिस्तान दो नए राष्ट्र बने, वहीं देशी रियासतें एक प्रकार से स्वतंत्र हो गई। ब्रिटिश सरकार ने घोषणा कर दी थी, देशी रियासतें इच्छानुसार भारत और पाकिस्तान में विलय हो सकती है। अधिकांश रियासतें भारत और पाकिस्तान में मिल गई और उनकी कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई, लेकिन कुछ रियासतें अपने आपको स्वतंत्र रखना चाहती थी। जैसे भारत के लिए हैदराबाद और जूनागढ़ ने अवश्य समस्या उत्पन्न कर दी थी, परन्तु वह शीघ्र ही हल कर ली गई। कश्मीर की समस्या अवश्य कुछ विशेष प्रकार की थी। भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा पर स्थित वह राज्य भारत और पाकिस्तान दोनों को जोड़ता है, क्योंकि यहां की जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग मुस्लिम धर्म था, परन्तु यहां का शासक हिन्दू राजा था। 15 अगस्त सन् 1947 में कश्मीर के शासक ने अपने विलय के विषय में कोई तात्कालिक निर्णय नहीं लिया। पाकिस्तान इसे अपने साथ मिलाना चाहता था। 22 अक्टूबर सन् 1947 को उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्त के कवायलियों ने एवं अनेक पाकिस्तानियों ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। पाकिस्तान ने अपनी सीमा पर भी अपने सैनिक का जमाव कर दिया। चार दिनों के भीतर ही हमलावर आक्रमणकारी श्रीनगर से 25 मील दूर बारामूला तक जा पहुंचे। 26 अक्टूबर को कश्मीर के शासक ने आक्रमणकारियों से अपने राज्य को बचाने के लिए भारत सरकार से सैनिक सहायता की मांग की और साथ ही कश्मीर को भारत में सम्मिलित करने की प्रार्थना की। भारत ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। 27 अक्टूबर को भारतीय सेना कश्मीर भेज दी गई तथा युद्ध समाप्ति पर जनमत संग्रह की शर्त के साथ कश्मीर को भारत का अंग मान लिया गया।

भारत और कश्मीर की सुरक्षा के निर्णय के कारण और पाकिस्तान द्वारा आक्रमणकारियों को सहायता देने की नीति के कारण कश्मीर दोनों देशों के मध्य युद्ध का क्षेत्र बन गया। शुरुआत में भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार से प्रार्थना की। वह कवायलियों का मार्ग बंद कर दें, जब इस बात के प्रमाण मिलने लगे कि पाकिस्तान की सरकार स्वयं इन कवायलियों की सहायता कर रही है, तो 01 जनवरी सन् 1948 को भारत सरकार ने सुरक्षा परिषद् में यह

शिकायत की कि पाकिस्तान से सहायता प्राप्त करने वाले कवायलियों ने भारत के एक अंग कश्मीर पर आक्रमण कर दिया है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा एवं शांति को खतरा है। दूसरी तरफ पाकिस्तान ने आरोप लगाया कि कश्मीर पर भारत अवैधानिक हक जता रहा है। सुरक्षा परिषद् ने इस समस्या को समाधान करने के लिए पांच राष्ट्रों चेकास्लाविया, अर्जेन्टीना, अमरीका, कोलम्बिया और वेल्जियम को सदस्य नियुक्त कर मौके पर स्थिति का अवलोकन करके समझौता कराने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र आयोग की नियुक्ति की। युद्ध विराम रेखा निर्धारित हो जाने पर पाक के हाथ में कश्मीर का 32000 वर्गमील क्षेत्रफल रह गया, इसकी जनसंख्या 7 लाख थी। पाकिस्तान ने इस क्षेत्र को आजाद कश्मीर कहा। युद्ध विराम रेखा के इस पर भारत के अधिकार में 53000 वर्गमील क्षेत्रफल था, जिसकी जनसंख्या 33 लाख थी। भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर तनाव का प्रमुख कारण है। यह कश्मीर को अब भी एक समस्या मानता है। एक पाकिस्तान पत्रकार के अनुसार ''हमारी भावनाएं अब भी कश्मीर के बारे में वैसी ही है, जैसी कि पहले थी, परन्तु एक बात याद रखनी चाहिए कि हमने सन् 1972 में शिमला सम्मेलन के दौरान भी कश्मीर देना स्वीकार नहीं किया। भारत का मत था कि पाकिस्तानी कश्मीर तथा अन्य कोई द्विपक्षीय मुद्दा संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से कभी नहीं उठा सकता, लेकिन पाकिस्तान इस दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करता।''

पंजाब के पठानकोट में एयरफोर्स स्टेशन पर 2 जनवरी 2016 को सुबह 3.30 बजे सुरक्षा बलों पर आतंकवादी हमला हुआ। आतंकवादी सेना की वर्दी में थे तथा उनके पास AK-47 थी, 52 मिनट तक आधुनिक शस्त्र तथा जीपीएस उपकरण भी उनके पास थे, इसमें हमारी भारतीय सेना ने 6 आतंकवादी को मार गिराया तथा भारतीय सेना के एक सुरक्षाकर्मी भी शहीद हुए। मारे गए आतंकवादी जैश–ए–मोहम्मद के थे। इनका उद्देश्य खड़े हैलीकॉप्टरों और विमानों को पूरी तरह से नष्ट करना था। इस हमले के मास्टर माइन्ड अजहर के खिलाफ NIA रेड कॉर्नर नोटिस जारी करेगा।

1– 22 फरवरी 2016 को कश्मीर के पम्पोर में ईका. आई बिल्डिंग में 2 आतंकवादियों को मार गिराया।

2– 20 मार्च 2016 को जम्मू के कुटुआ जिले में आतंकी हमले में 2 सैनिक शहीद हुए तथा 4 व्यक्ति मारे गए।

3– 3 जून 2016 को कश्मीर के अनन्तनाग में आतंकी हमले में एस.ए.एफ. के 3 जवान शहीद हुए तथा 6 घायल।

4– 24 जून 2016 को कश्मीर के पुलवामा में आतंकवादियों ने आक्रमण किया, 8 जवान शहीद हुए और 22 घायल हुए।

5– 21 जुलाई 2016 को उधमपुर में सी.आर.एफ के कैम्प पर हमला किया, एक महिला मारी गई और 2 व्यक्ति घायल।

वर्ष 2015 में जम्मू–कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं में सुरक्षा बलों द्वारा 113 आतंकवादियों को मार गिराया तथा उनसे 300 से अधिक हथियार हासिल किए। इन घटनाओं में सुरक्षा बल तथा 20 नागरिक मारे गए। वर्ष 2016 में अगस्त माह 2016 तक 134 आतंकवादी घटनाएं हुई हैं, इनमें 93 आतंकवादी मारे गए हैं। 34 सुरक्षा बल भी शहीद हुए तथा 7 नागरिक मारे गए। इन आतंकवादी घटनाओं के अलावा कश्मीर में इण्डियन मुजाहिद्दीन के पोस्टर ब्वॉय बुरहला वाली जिस पर कश्मीर में और भारत में आतंक और हिंसा को अंजाम देने के निर्देश में भारतीय सुरक्षा बलों

ने अनन्तनाग जिले के कोंकणनाग इलाके में 8 जुलाई 2016 को मार गिराया, बुरहला वाली पर 10 लाख रुपए का इनाम था।

6– **पुलवामा हमला** :–

14 फरवरी 2019 जम्मू–श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारतीय सुरक्षाकर्मियां को ले जा रहे वाहनों के काफिले पर जम्मू और कश्मीर के तत्कालीन राज्य के पुलवामा जिले के लेथापोरा में एक वाहन–जनित आत्मघाती हमलावर ने हमला किया था। इस हमले में 40 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) के जवानों के साथ–साथ अपराधी–आदिल अहमद मारा गया, जो पुलवामा जिले का एक स्थानीय कश्मीरी युवक था। हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान स्थित इस्लामी आतंकवादी समूह जैश–ए– मोहम्मद ने ली थी। भारत ने हमले के लिए पड़ोसी देश पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराया, जबकि पाकिस्तान ने हमले की निंदा की और इससे कोई संबंध होने से इंकार कर दिया।

हमले ने भारत–पाकिस्तान संबंधों को गहरा झटका दिया। अगस्त 2021 तक मुख्य आरोपी सहित छः अन्य मारे जा चुके थे और 7 को गिरफ्तार कर लिया गया था।

7– **2025 पहलगाम हमला–**

भारतीय प्रशासित जम्मू और कश्मीर में पहलगाम के पास पांच सशस्त्र आतंकवादियों द्वारा पर्यटकों पर एक आतंकवादी हमला था, जिसमें 22 अप्रैल सन् 2025 को 26 नागरिक मारे गए थे। आतंकवादियों ने मुख्य रूप से हिन्दू पुरुष पर्यटकों को अपना निशाना बनाया, हालांकि एक ईसाई पर्यटक और एक स्थानीय मुस्लिम मारे गए।

M4- कार्बाइन और AK-47 से लैश हमलावर घने देवदार के जंगलों से घिरी बेसरन घाटी में पर्यटक स्थल में घुस गए। इस घटना को 2008 के मुम्बई हमलों के बाद से भारत में नागरिकों पर सबसे घातक हमला माना जाता है।

ऑपरेशन सिन्दूर :–

7 मई 2025 को भारत ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (POK) और पाक में मौजूद 9 आतंकी ठिकानों पर एयर स्टॉइक की थी। भारतीय सेना ने लगभग 100 आतंकियों को मार गिराया था। दोनों देशों के मध्य 10 मई की शाम 5.00 बजे से सीजफायर पर सहमति बनी थी।

उद्देष्य–

(1) भारत तथा पाकिस्तान संबंधों को प्रभावित करने वाले विवादित कारणों का अध्ययन करना।

(2) भारत तथा पाकिस्तान के बीच कश्मीर विवाद का अध्ययन करना।

(3) भारत–पाकिस्तान संबंधों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

(4) भारत–पाकिस्तान संबंधों के प्रभावी विकास के मध्य आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

(1) भारत–पाकिस्तान संबंध ऐतिहासिक विवादों के कारण सदैव से ही तनावपूर्ण है।

(2) भारत–पाकिस्तान संबंधों को कश्मीर विवाद समस्या स्वतंत्रता से लेकर वर्तमान समय तक प्रभावित करता है।

(3) आतंकवाद जैसी समस्याएं भारत–पाकिस्तान के प्रभावी विकास के बीच बड़ी चुनौती के रूप में परिलक्षित होती है।

(4) पाकिस्तान के अमेरिका, रूस तथा चीन के साथ संबंध भारत–पाक संबंधों को प्रभावित करता है।

(5) पाकिस्तान द्वारा भारत पर परमाणु हमले की धमकी देना।

शोध पद्धति–

हम सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान की समस्या का विश्लेषण करने के लिए उपयुक्त पद्धति का चुनाव, समस्या की प्रकृति के अनुसार करते हैं। शोध छात्र ने अपने अनुसंधान उद्देश्य के लिए प्रथम व द्वितीय स्रोतों से सूचनाएं एकत्र की है।

प्रथम सामग्री में रिपोर्ट, दस्तावेज, भाषण, वाद–विवाद आदि से सूचनाएं एकत्रित की है।

द्वितीय सामग्री में पुस्तकें, लेख, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय समाचार पत्र, पत्रिकाएं, वेबसाइटें व विभिन्न आयोगों तथा सम्मेलनों के सिफारिश पत्र व प्रस्ताव आदि से सूचनाएं एकत्रित की हैं।

अध्ययन का महत्व–

भारत और पाकिस्तान संबंध ऐतिहासिक विवादों के कारण सदैव से ही तनावपूर्ण रहे हैं, जिसके कारण भारत तथा पाकिस्तान के बीच बहुत कम समय तक तनावों में कमी या (शैथिल्यता) का रहा है। अतः भारत–पाक संबंध विश्व राजनीति में एक चिन्तनीय विषय के रूप में सामने आते हैं, क्योंकि दोनों ही राष्ट्र परमाणु अस्त्र–शस्त्र से सम्पन्न राष्ट्र है।

यदि भविष्य में दोनों राष्ट्रों के मध्य युद्ध हुआ तो वे परमाणु शस्त्र का प्रयोग करेंगे, जिसके परिणाम सम्पूर्ण विश्व के लिए बेहद घातक सिद्ध हो सकते हैं। अतः वर्तमान समय भारत–पाकिस्तान के बीच संबंधों का अध्ययन विश्व शान्ति व विश्व बन्धुत्व की भावना को स्थापित करने हेतु महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध दोनों देशों के संबंधों के नए आयामों का विश्लेषण करेगा। अनुसंधान के परिणामों का लाभ अनुसंधानकर्ताओं तथा नीति निर्माताओं को प्राप्त हो सकेगा। उपर्युक्त अनुसंधान के द्वारा भारत–पाकिस्तान के बीच संबंधों का विश्लेषणात्मक रूप से अध्ययन करने में सहायता प्राप्त हो सकेगी। साथ ही निर्देशनकर्ता तथा परामर्शदाता भी प्रस्तुत शोध के परिणामों से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तुत अनुसंधान के द्वारा ''अन्तर्राष्ट्रीय संबंध विषय के क्षेत्र के विद्यार्थी भी इसके प्रति सम्पूर्ण ज्ञान अर्जित कर सकें।''

भारत–पाकिस्तान संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–

भारत–पाकिस्तान के बीच स्वतंत्रता के बाद से लगातार कई बार वार्ता के दौर चले विचार–विमर्श हुआ, किन्तु कोई सन्तोषजनक समाधान आज तक नहीं निकल पाया। भारत–पाकिस्तान के 1947 स्वतंत्रता के बाद से कई युद्ध व कई समझौते किए गए हैं, लेकिन 1996 में कश्मीर पर पाकिस्तान द्वारा आक्रमण किए जाने के बाद से ही पं. जवाहरलाल नेहरू ने निरन्तर इस बात को लेकर प्रयास किया कि दोनों राष्ट्रों के बीच किसी भी प्रकार युद्ध न करने संबंधी एक स्थाई समझौता हो जाए, परन्तु उसमें वे हमेशा असफल सिद्ध हुए। सबसे पहला प्रयास 22 दिसम्बर 1949 को किया गया। जब भारत ने नई दिल्ली में पाकिस्तान के उच्चायुक्त को एक प्रस्तावित संयुक्त घोषणा का सुझाव दिया, उसके उपरान्त कुछ दिन बाद पं. जवाहरलाल नेहरू ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को पत्र लिखा कि मैं समझता हूं कि हम दोनों भारत तथा पाकिस्तान इस बात के लिए सहमत हो जाएं कि कोई भी कारण क्यों न हो, हम आपस में युद्ध नहीं करेंगे तथा अपनी समस्याओं को शान्तिपूर्ण तरीके से हल करेंगे, जिससे दोनों राष्ट्र अपना तथा अपने देश के नागरिकों का सर्वांगीण विकास आसानी से कर सकें।

क्श्मीर में साम्प्रदायिक एवं जाति दंगे–

कश्मीर के विकास की गति जाति–समुदाय के टकराव के कारण अपना सम्पूर्ण विकास नहीं कर पा रहा है। कश्मीर के इतिहास में सबसे बड़ा जातिगत दंगा 19 फरवरी 1990 में कश्मीरी पण्डितों पर असहनीय व नरसंहार किया गया था। 19वीं सदी में कश्मीर पण्डितों की सेरत्या 4 से 7 लाख की आबादी थी, परन्तु 1990 के नरसंहार ने हिन्दू पण्डितों को कश्मीर छोड़ने पर मजबूर कर दिया गया और आज 35 वर्ष पूरे होने पर भी कश्मीरी पण्डितों के घर जला दिए गए और कश्मीरी पण्डितों के जख्म अभी भी भरे नहीं हैं न उन्हें इंसाफ मिला न ही सम्मान मिला। रोजगार व कश्मीरी व कश्मीरी पण्डितों की संख्या घट रही है और युवा पीढ़ी में नौकरी न मिल पाने व शादी के लम्बे समय तक टाल देना यह सोच उन्हें समय से पहले बूढ़ा बना रही है, जिससे कश्मीरी पण्डितों का पलायन करना पड़ रहा है, जिससे कश्मीरी पण्डितों की आबादी घट रही है। आज भी कश्मीर में जातिगत दंगों द्वारा आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है। आज भी पाकिस्तान अपनी घातक चाल और जातिगत दंगों से बाज नहीं आ रहा है। पाकिस्तान द्वारा संसद पर हमला व कई धमकियों व मुम्बई में 26/11 हमले द्वारा भारत को दहला दिया, जिसमें भारत की कार्यवाही में कई आतंकवादियों को मार गिराया। कश्मीर में घुसपैठ की वारदात तो लगभग कई वर्षों से चली आ रही है। आज तो घुसपैठ सैनिक व पुलिस स्टेशनों को निशाना बना रहे हैं।

सर्जिकल स्ट्रॉइक–

पाकिस्तान कब्जे वाले कश्मीर में एकसाथ कई आतंकियों शिविरों के खिलाफ सेना की विशेष अभियान बल की करीब 100 विशेष प्रशिक्षित जवान 28 सितम्बर की देर रात नियंत्रण रेखा के पार की गई जगहों पर चुपचाप इंतजार कर

रहे हैं। चन्द्रमा की किरणें धीरे–धीरे मध्यम पड़ती जा रही थी और धूप अंधेरा जाता जा रहा था। भारतीय सेना की यह अत्याधुनिक प्रशिक्षण से लैस पैराशूट रेजीमेन्ट की विशेष टुकड़ी निर्णायक पल की पहले मानो, गुमनाम सी थी। ये जवान ऊबड़–खाबड़ पीर पंजाब की पहाड़ियों में जैसे घुल गए थे, उन्होंने अपनी पहचान के चारों निशान मिटा दिए थे, उनकी पोशाक जंगल के रंग में समा गई थी। चेहरे में हरे रंग से पुते हुए थे, चमड़ी पर मिट्टी की एक परत चढ़ी थी, ताकि शरीर की गंध न आए, उनके हथियारों पर कला रंग चढ़ा था। ये करीब 48 घंटे से झाड़ियों में पड़े थे, उनके दिमाग में अपने मिशन की कामयाबी के अलावा कुछ नहीं था। निर्णायक जवाबी कार्यवाही 29 सितम्बर का अभियान इस मायने में अलग था कि 200 कि.मी. के दायरे में कई ठिकानों व कई आतंकियों को मार गिराया वो उनके बारूद के जखीरे को नष्ट किया गया व आतंकियों को काफी नुकसान हुआ। 29 सितम्बर को जब लॉन्च पैड से लपटें उठ रही थी। नई दिल्ली में डीजीएमओ लेफ्टिनेन्ट जनरल रणवीर सिंह ने एक प्रेस वार्ता में ऐलान किया कि भारत ने हमले के मकसद से आतंकियों की घुसपैठ की पक्की सूचना पाकर उनके खिलाफ सीमा के पास सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया है।

28 सितम्बर 2016 को की गई सर्जिकल स्ट्राइक 18 सितम्बर को कश्मीर के उरी में सैन्य शिविर पर हुए आतंकवादी हमले का बदला लेने के लिए की गई थी, जिसमें पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों ने 19 सैनिकों को मार डाला था। तब से सरकार द्वारा 29 सितम्बर को ''सर्जिकल स्ट्राइक दिवस'' के रूप में नामित किया गया है। 7 मई 2025 को भारतीय वायुसेना ने 1:5 से 1:30 बजे के बीच पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (POK) के अंदर 9 आतंकियों के ठिकानों पर हवाई हमले किए। इसे ऑपरेशन सिन्दूर नाम दिया गया था। ऑपरेशन सिन्दूर का नेतृत्व कर्नल सोफिया कुरैशी व विंगकमांर व्योमिका सिंह द्वारा कुशलता से किया था।

साहित्य समीक्षा–

Ali Mujahid Rehman 2015– प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा भारत–पाकिस्तान शान्ति व्यवस्था में व्यापार के महत्व की पहचान की गई है। इस लेख में बताया गया है कि व्यापार भारतीय उपमहाद्वीप में शान्ति और स्थिरता को प्राप्त करने और बनाए रखने में सहायक है। आर्थिक निर्भरता के द्वारा शान्ति और आपसी आर्थिक लाभ को बढ़ावा मिला है, जो राष्ट्रों के बीच युद्धों को रोकती है, इसके अतिरिक्त भारत–पाकिस्तान व्यापार संबंधों को देखते हुए द्विपक्षीय व्यापार के लिए निम्न उपाय जैसे वर्तमान व्यापार की मात्रा, भारत–पाकिस्तान शान्ति वार्ताओं, क्षेत्रीय और सीमा विवादों और समझौते में इसकी भूमिका का विश्लेषण करने के लिए किया गया है।

Singh 2016– प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा जम्मू और कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग माना है और भारत को पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर अपनी चुप्पी तोड़ने की हिदायत दी है। लेखक ने कहा है कि वर्ष 2016 के सूचना विनिमय बिल (POK) पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पर भारत के मानचित्र निर्माण से संबंधित पुष्ट का अभिकथन पर्याप्त नहीं है। इस हेतु भारत में तथा विश्व के अन्य देशों को इस मुद्दे का अनुभव करने के लिए एक प्रभावी बदलाव होना आवश्यक है, जिसमें ठोस नीतिगत उपायों को शामिल करना होगा।

Ganguly, Smetana, Abdullah and Kurmazin 2018–

प्रस्तुत लेख में लेखकों द्वारा भारत और पाकिस्तान के मध्य कश्मीर को आधुनिक इतिहास का अधिक विरोधाभासी संघर्ष कड़ा है। यह लेख दक्षिण एशिया प्रतिद्वंदिता की जांच करता है। इस लेख में लेखकों द्वारा एशियाई–यूरोप के स्थिर संघर्षों की गतिशीलता की समझ उत्पन्न की गई है।

Chadda 2018–

लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में भारत तथा पाकिस्तान की विदेश नीति के वर्तमान स्वरूप का वर्णन किया है, जिसमें वे पाकिस्तान की वर्तमान नीति में सेना के निहित स्वार्थों को देखते हुए पाकिस्तान की नीति को आतंकवाद पायोजित नीति की संज्ञा देते हैं। इस हेतु लेखक का मानना है कि जब तक पाकिस्तान की कश्मीर नीति के प्रमुख वास्तुकार अर्थात् सेना को नुकसान नहीं पहुंचाती, तब तक अर्न्राष्ट्रीय संबंधों की गम्भीरता के जवाब में मामूली समायोजन होगा, परन्तु इसके साथ ही छद्म युद्ध (हिंसा) तथा आतंकवाद जारी रहेगा। भारतीय नीति जो अभिजात वर्ग पर निर्भर है।

Singh Nadan 2023– प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा वर्तमान समय में भारत पाकिस्तान संबंधों का विश्वस्तरीय संघर्षों को बताता है, जिसमें दोनों राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक दूसरे के साथ संघर्ष तथा विरोध की भावना के साथ दोनों अपने विचारों तथा भावों को व्यक्त करते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष तौर पर हम कह सकते हैं कि जब भारत देश आजाद हुआ है, तब से कश्मीर समस्या का समाधान अभी तक नहीं हुआ है। भारत ने समय–समय पर जम्मू कश्मीर समस्या का समाधान करने का प्रयास किया, लेकिन सभी प्रयास किया, किन्तु सभी प्रयास निरर्थक रहे हैं। आतंकवाद दोनों देशों के बीच एक प्रमुख समस्या बना हुआ है, लेकिन पाकिस्तान आतंकवाद के स्थान पर कश्मीर समस्या को ही दोनों देशों की प्रमुख समस्या मानता है। इसके विपरीत भारत आतंकवाद को दोनों देशों के बीच तनाव का प्रमुख कारण माना गया है। यहां दोनों के दृष्टिकोण में व्यापक अन्तर दिखाई देता है।

भारत–पाकिस्तान के संबंध अच्छे होंगे, तो दोनों देश के बीच आपसी व्यापार बढ़ेगा व विकास भी होगा। साम्प्रदायिक दंगे व आतंकवाद पर अंकुश लगेगा। एशिया महाद्वीप में नई इबादत होगी कि दो देशों की जनता एक हो गई, जिससे समाज में जाति तथा धार्मिक सभी प्रकार के भेदभाव खत्म किया जा सके। भारत और पाकिस्तान के संबंध मधुर होंगे। आयात–निर्यात तकनीकी, रक्षा, शिक्षा, जल, विद्युत कई मूलभूत सुविधाएं आसान हो जाएंगी व कश्मीर समस्या का समाधान हो जाएगा, ये कहना आसान न होगा कि कब तक भारत–पाकिस्तान के अपने संबंध अच्छे होंगे और कब तक हालात सामान्य होंगे, क्योंकि साम्प्रदायिक दंगों ने जन्म लिया है। अतः भारत–पाकिस्तान को आपस में मिलकर एक टेबल पर बात करनी चाहिए, ताकि जम्मू–कश्मीर समस्या का कुछ निर्णय निकल सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) बसु डी.डी. (2018) भारत का संविधान दिल्ली लेक्सिस नेक्सिस बुक्स इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड

(2) फड़िया बी.एल. एवं फड़िया कु.दी. (2020) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, आगरा साहित्य भवन।

(3) मिश्रा रा.जे. (2018) राज. वि. एक समग्र अध्ययन 6 संस्करण, हैदराबाद, ओरियन्ट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड

(4) लक्ष्मीकान्त एम. (2017) भारत की राज व्यवस्था 5 संस्करण, तमिलनाडु मैकग्रा हिल एजुकेशन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड

(5) पाण्डेय प्रो. परमेश्वर भारत एवं आधुनिक विश्व (ग्वालियर 1990)

(6) दीक्षित जे.एन. (2005) भारत की विदेश नीति और पड़ोसी, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस

(7) अटूट अमिलाभः पाकिस्तान द रॉंग स्टेट (ए पी सेन्टर ऑफ टेरेरिज्म) एशियन विजन पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2018

(8) बिन्द्रा एस.एस.डायनामिक्स ऑफ पाकिस्तान फॉरेन पॉलिसी, दीप एण्ड पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2011

(9) राईन शमीम, 21वीं सदी के बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य, भारत–पाक संबंध, अल्फा पब्लिकेशन नई दिल्ली 2012

(10) कुमार आशुतोषः पाकिस्तान वॉर ऑन 'गुड' वर्सेस 'वेड' तालिबान एशियन विजन पब्लिशर्स नई दिल्ली 2018

(11) डाबला बी.ए.: इन्क्रीजिंग स्यूयिसाइड इन कश्मीर रॉ सोशियोलॉजिकल स्टडी, कल्पाज पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2013